॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कुंडली मिलान

RAJESH SINGH
10/10/1990 9:26PM
Mumbai, Maharashtra, India

SHRADDHA SINGH
27/3/1994 10:44AM
Satara, Maharashtra, India

निर्मित

VEDIC rishi

कुंडली मिलान का महत्व

ज्योतिष शास्त्र, विश्व में और प्रत्येक प्राणी की जीवनधारा में हर पल घटने वाली संभाव्य घटनाओं का अनुमान के आधार पर संभाव्य विवरण प्रस्तुत करता है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु विवाह आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी जातक की प्रकृति ,अभिरुचि ,उसका व्यक्तित्व और उसका व्यव्हार उसके जन्म नक्षत्र और राशी के आधार पर निर्धारित होता हैं। इसी आधार पर वर -वधु के जन्म नक्षत्र और जन्म राशी का मिलान करना गुण मिलान कहलाता हैं। गुण मिलान के आधार पर जाना जाता हैं की दोनों में परस्पर कैसा सम्बन्ध रहेगा।

कुंडली मिलान एक प्राचीन प्रणाली है जिसके द्वारा संभावित वर-वधू के आपसी तालमेल का आकलन किया जाता है। वर-वधू के वैवाहिक जीवन को सुखद और अनुकूल बनाने के लिए यह पहला कदम होता है। विवाह के उपरांत वर/कन्या को भविष्य में समस्याओं का सामना न करना पड़े इसलिए विवाह पूर्व वर/कन्या के माता-पिता, दोनों की जन्मकुण्डली का मिलान करवाते है, जोकि अति आवश्यक है|

प्रस्तुत कुंडली मिलान रिपोर्ट में सभी प्रमुख जन्मपत्रिका मिलान के विधियों का प्रयोग एवं विश्लेषण किया गया है। इनमे अष्टकूट मिलान, दशकूट मिलान, मांगलिक मिलान, रज्जु व वेध दोष विश्लेषण के साथ ही उनके फल भी दिए गए हैं।

सामान्य विवरण

Rajesh	गुण	Shraddha
10/10/1990	जन्म दिनांक	27/3/1994
21:26	जन्म समय	10:44
20 N 20	अक्षांश	17 E 40
75 N 30	देशांतर	74 E 01
+5:30	समय क्षेत्र	+5:30
6:21:12	सूर्योदय	6:32:51
18:8:43	सूर्यास्त	18:46:13
NaN:NaN:NaN	अयनांश	NaN:NaN:NaN

ज्योतिषीय विवरण

Rajesh	गुण	Shraddha
शूद्र	वर्ण	वैश्य
मानव	वश्य	मानव
स्वान	योनि	गौ
मनुष्य	गण	मनुष्य
आदि	नाड़ी	आदि
बुध	राशि स्वामी	बुध
आर्द्रा	नक्षत्र	उत्तर फाल्गुनी
राहु	नक्षत्र स्वामी	सूर्य
4	चरण	4
परिघ	योग	वृद्धि
बावा	करण	बावा
कृष्ण सप्तमी	तिथि	पूर्णिमा
मध्य	युञ्जा	मध्य
वायु	तत्त्व	पृथ्वी
छ	नामाक्षर	पी
चांदी	पाया	चांदी

www.vedicrishi.in

ग्रह स्थिति

Rajesh ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	कन्या	23:21:17	बुध	चित्रा	मंगल	5
चन्द्र	--	मिथुन	17:06:32	बुध	आर्द्रा	राहु	2
मंगल	--	वृष	20:05:57	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	1
बुध	--	कन्या	14:54:33	बुध	हस्त	चन्द्र	5
गुरु	--	कर्क	16:01:34	चन्द्र	पुष्य	शनि	3
शुक्र	--	कन्या	17:41:42	बुध	हस्त	चन्द्र	5
शनि	--	धनु	25:13:25	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	8
राहु	R	मकर	09:45:42	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	9
केतु	R	कर्क	09:45:42	चन्द्र	पुष्य	शनि	3
लग्न	--	वृष	19:57:30	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	1

Shraddha ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	मीन	12:31:45	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	11
चन्द्र	--	कन्या	09:01:56	बुध	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	5
मंगल	--	कुम्भ	21:44:36	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	10
बुध	--	कुम्भ	16:13:21	शनि	शतभिसा	राहु	10
गुरु	R	तुला	19:47:16	शुक्र	स्वाति	राहु	6
शुक्र	--	मीन	29:19:12	गुरु	रेवती	बुध	11
शनि	--	कुम्भ	13:01:14	शनि	शतभिसा	राहु	10
राहु	R	वृश्चिक	02:48:12	मंगल	विशाखा	गुरु	7
केतु	R	वृष	02:48:12	शुक्र	कृतिका	सूर्य	1
लग्न	--	वृष	22:01:45	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	1

www.vedicrishi.in

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

Rajesh

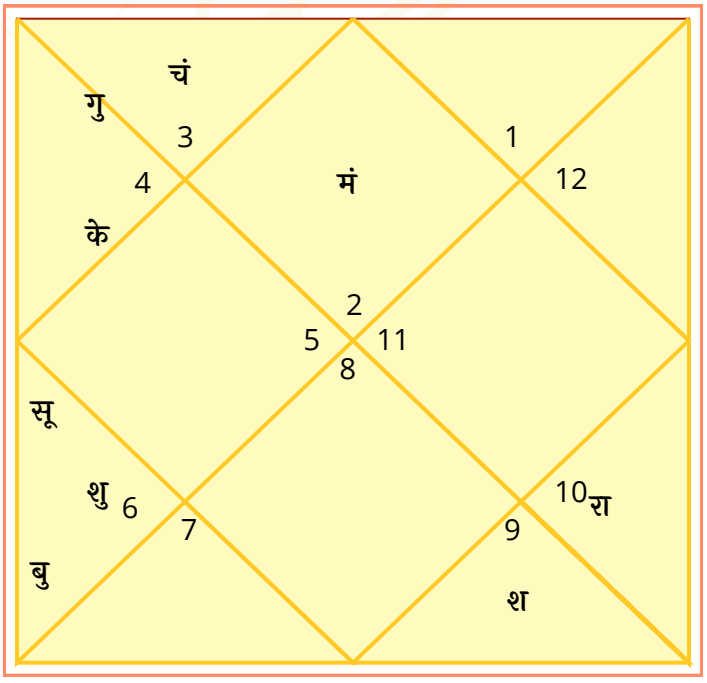

Shraddha

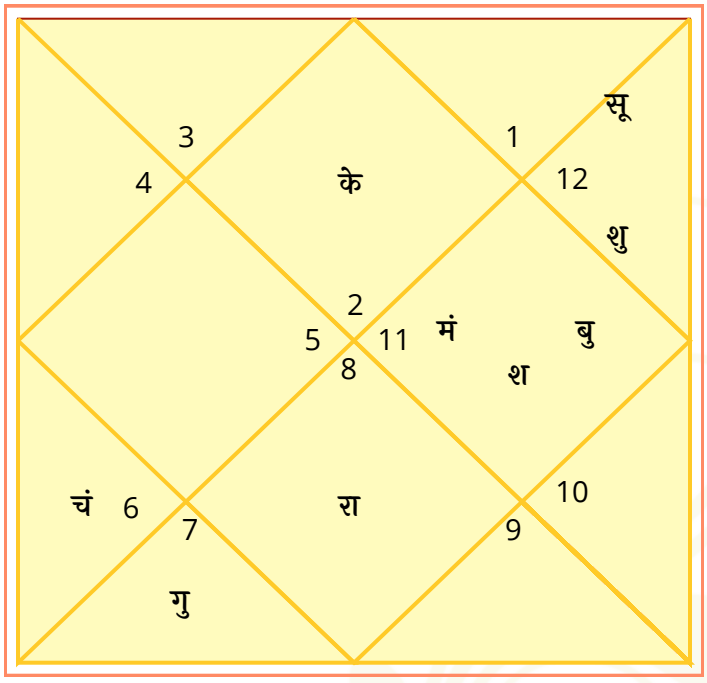

चलित कुंडली

Rajesh

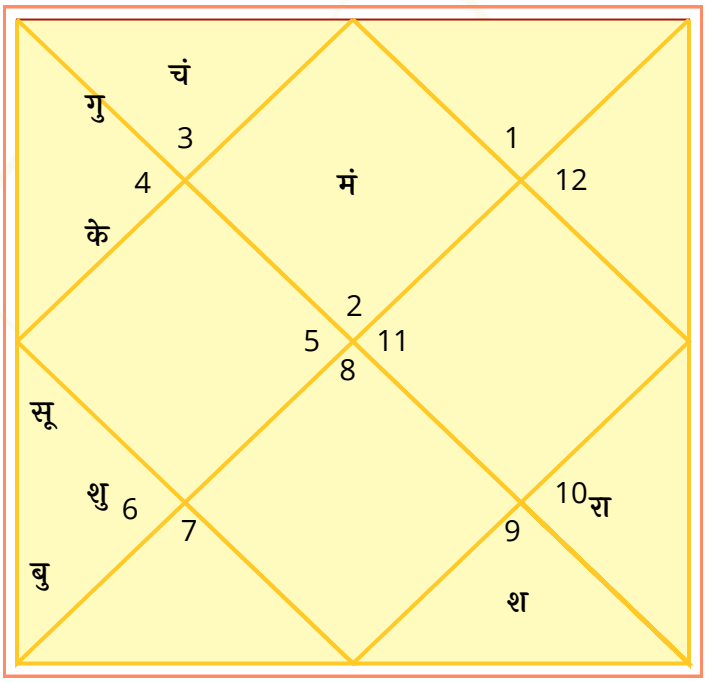

Shraddha

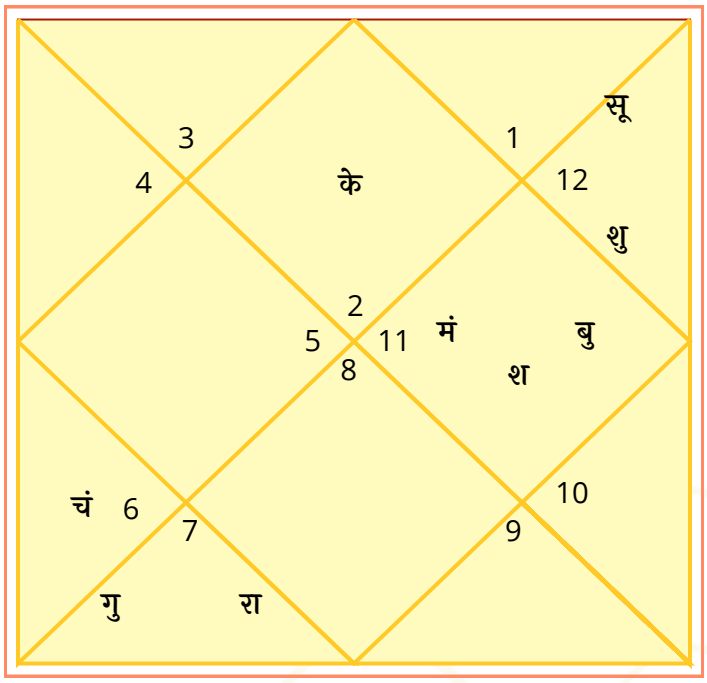

www.vedicrishi.in

चंद्र कुंडली

Rajesh

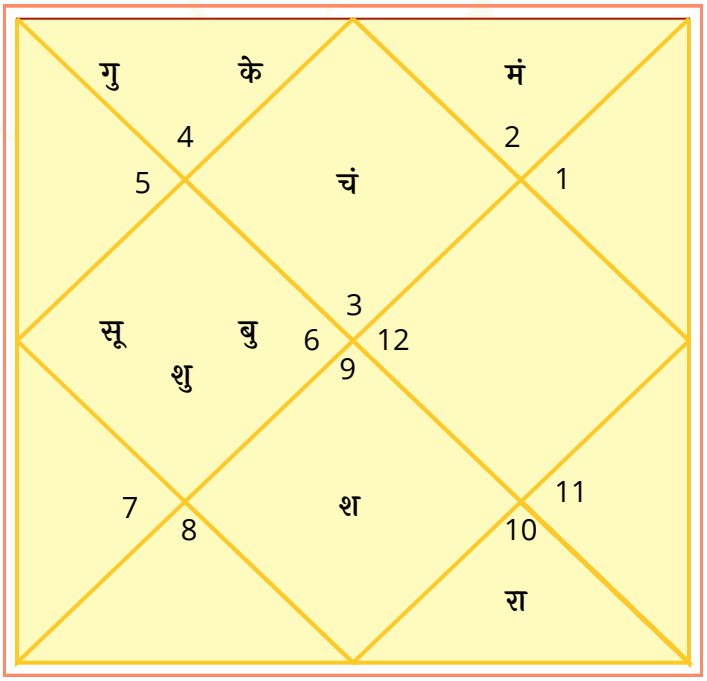

Shraddha

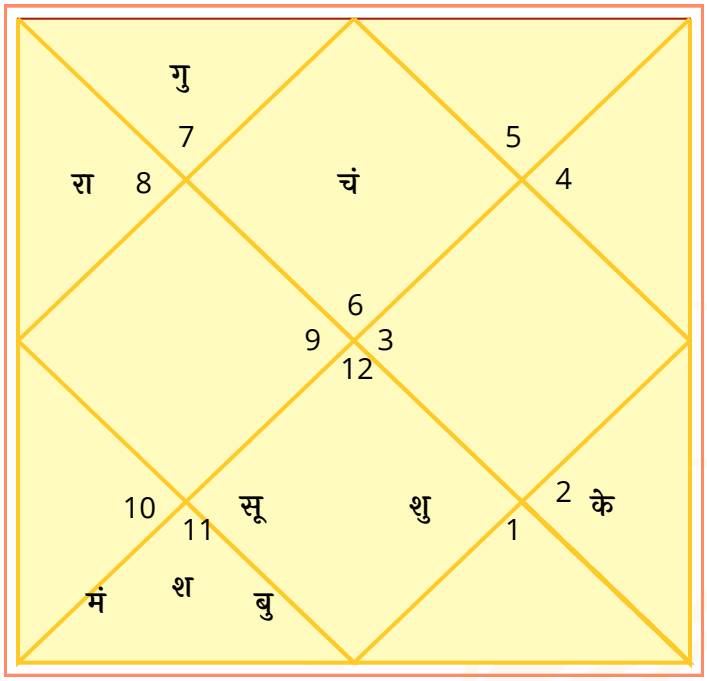

नवमांश कुंडली

Rajesh

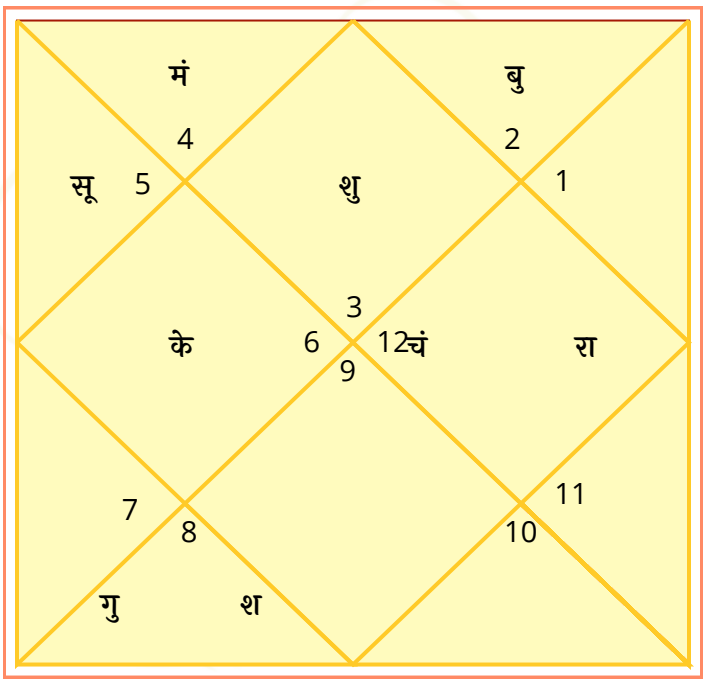

Shraddha

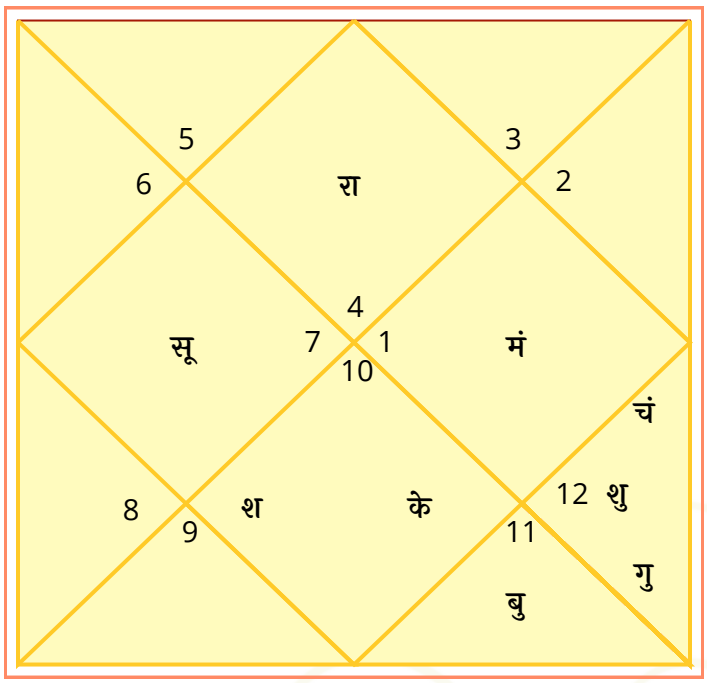

www.vedicrishi.in

वर्त्तमान दशा

महादशा

राहु

राहु	05-09-1994 11:00
गुरु	05-09-2010 11:00
शनि	05-09-2029 05:00
बुध	05-09-2046 11:00
केतु	05-09-2053 05:00
शुक्र	05-09-2073 05:00
सूर्य	05-09-2079 17:00
चन्द्र	05-09-2089 05:00
मंगल	04-09-2096 23:00

अंतर दशा

राहु > शनि

शनि	08-09-2013 06:03
बुध	18-05-2016 09:12
केतु	27-06-2017 04:51
शुक्र	26-08-2020 19:51
सूर्य	08-08-2021 19:33
चन्द्र	10-03-2023 03:03
मंगल	17-04-2024 22:42
राहु	22-02-2027 21:48
गुरु	05-09-2029 05:00

प्रत्यंतर दशा

राहु > शनि > शुक्र

शुक्र	05-01-2018 23:21
सूर्य	04-03-2018 19:18
चन्द्र	09-06-2018 04:33
मंगल	15-08-2018 15:50
राहु	05-02-2019 03:41
गुरु	09-07-2019 08:53
शनि	08-01-2020 12:03
बुध	20-06-2020 08:35
केतु	26-08-2020 19:51

सूक्ष्म दशा

राहु > शनि > शुक्र > शनि

शनि	07-08-2019 08:47
बुध	02-09-2019 07:26
केतु	12-09-2019 23:49
शुक्र	13-10-2019 12:21
सूर्य	22-10-2019 16:06
चन्द्र	06-11-2019 22:22
मंगल	17-11-2019 14:45
राहु	15-12-2019 02:02
गुरु	08-01-2020 12:03

www.vedicrishi.in

वर्त्तमान दशा

महादशा

सूर्य

सूर्य	02-09-1994 12:18
चन्द्र	02-09-2004 00:18
मंगल	02-09-2011 18:18
राहु	02-09-2029 06:18
गुरु	02-09-2045 06:18
शनि	02-09-2064 00:18
बुध	02-09-2081 06:18
केतु	02-09-2088 00:18
शुक्र	03-09-2108 00:18

अंतर दशा

सूर्य > राहु

राहु	15-05-2014 22:30
गुरु	08-10-2016 12:54
शनि	15-08-2019 12:00
बुध	03-03-2022 21:18
केतु	22-03-2023 09:36
शुक्र	22-03-2026 03:36
सूर्य	13-02-2027 21:00
चन्द्र	14-08-2028 18:00
मंगल	02-09-2029 06:18

प्रत्यंतर दशा

सूर्य > राहु > शनि

शनि	22-03-2017 08:33
बुध	16-08-2017 19:49
केतु	16-10-2017 13:10
शुक्र	08-04-2018 01:01
सूर्य	30-05-2018 02:10
चन्द्र	24-08-2018 20:06
मंगल	24-10-2018 13:27
राहु	29-03-2019 16:55
गुरु	15-08-2019 12:00

सूक्ष्म दशा

सूर्य > राहु > शनि > गुरु

गुरु	17-04-2019 05:03
शनि	09-05-2019 04:29
बुध	28-05-2019 20:23
केतु	05-06-2019 22:42
शुक्र	29-06-2019 01:52
सूर्य	06-07-2019 00:26
चन्द्र	17-07-2019 14:01
मंगल	25-07-2019 16:20
राहु	15-08-2019 12:00

www.vedicrishi.in

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

मांगलिक दोष प्रभाव

- मंगल ग्रह की पहले भाव में स्थिति:

लग्न में मंगल हो तो स्वास्थ्य पर दुषप्रभाव पड़ता हैं, व्यक्ति स्वभाव से उग्र एवं जिद्दी होता है। मंगल के दुश प्रभाव से पति या पत्नी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है ! सातवी दृष्टि के कारण जीवन साथी को किसी धारदार हथियार से चोट की आशंका भी बनी रहती है !

- मंगल ग्रह की द्वितीय भाव में स्थिति :

मंगल दुसरे स्थान पर होने से परिवार में सदस्यों की बढ़ोतरी नहीं होती ! इस प्रकार या तो विवाह देर से होता है या होता ही नहीं, कई बार विवाह के उपरान्त संतान उत्पत्ति में रुकावटे आती है!

- मंगल ग्रह की चतुर्थ भाव में स्थिति:

इस घर में मंगल के दुश प्रभाव से जातक के विवाहित जीवन में आने वाली खुशियाँ मनो ख़त्म सी हो जाती है, विवाह हो जाने के बावजूद विवाह का सुख नहीं मिलता ! चौथे भाव पर मंगल के दुश प्रभाव से जीवन साथी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है !

- मंगल ग्रह की सप्तम भाव में स्थिति:

सातवें स्थान में स्थिति मंगल दाम्पत्य सुख (रति सुख) की हानि तथा पत्नी के स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाता है। इस स्थान में स्थित मंगल की दशवें एवं दूसरे भाव पर दृष्टि पड़ती है। दशम से अजीविका का तथा द्वितीय स्थान से कुटुम्ब का विचार किया जाता है। अतः इस स्थान में स्थित मंगल आजीविका एवं कुटुम्ब पर भी अपना प्रभाव डालता है।

- मंगल ग्रह की अष्टम भाव में स्थिति:

कुंडली का आठवा घर जीवन साथी की उम्र से सम्बंधित होता है ! इस घर में मंगल के आने से जीवन साथी की कम आयु का खतरा बना रहता है! इस प्रकार आठवे घर में मंगल दोष होने से विवाहित जीवन पर दुश प्रभाव पड़ता है!

- मंगल ग्रह की बारहवे भाव में स्थिति:

जिस जातक की कुंडली के बारहवे घर में मंगल होता है वह जातक अधिक व्याभिचारी होता है, जिस कारण से जातक कई लोगो के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाता है तथा किसी भयंकर गुप्त अंगो की बिमारी से ग्रिस्त हो जाता है!

www.vedicrishi.in

भाव के आधार पर

लग्न भाव में मंगल अवस्थित है।

शनि अष्टम भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

दृष्टि के आधार पर

आपकी कुंडली में लग्न भाव को राहु देख रहा है।

शनि की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

मंगल , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

सप्तम भाव मंगल से दृष्ट है।

सप्तम भाव केतु से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव मंगल से दृष्ट है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	20%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

www.vedicrishi.in

भाव के आधार पर

केतु आपके कुंडली में लग्न भाव में है।

राहु आपके कुंडली में सप्तम भाव में है।

दृष्टि के आधार पर

सप्तम भाव शनि से दृष्ट है।

सप्तम भाव केतु से दृष्ट है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को शनि देख रहा है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव मंगल से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव शनि से दृष्ट है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को मंगल देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को राहु देख रहा है।

सूर्य , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

मंगल , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

केतु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	18.75%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

www.vedicrishi.in

मांगलिक विश्लेषण

Rajesh मांगलिक विवरण

कुल मांगलिक प्रतिशत - **20%**

Shraddha मांगलिक विवरण

कुल मांगलिक प्रतिशत - **18.75%**

मांगलिक मिलान परिणाम

लड़का मांगलिक नहीं है; और न ही लड़की मांगलिक है। दोनों कुंडलियों में मंगल दोष अनुपस्थित होने के कारण भविष्य में उनके वैवाहिक जीवन पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा यह विवाह किया जा सकता है।

अष्टकूट विवरण

अष्टकूट क्या होता है?

कुण्डली मिलान की अष्टकूट पद्धति में, गुणों की अधिकतम संख्या ३६ है। वर और कन्या के बीच गुण अगर ३१ से ३६ के मध्य में हो तो उनका मिलाप अति उत्तम होता है। गुण अगर २१ से ३० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप बहुत अच्छा होता है। गुण अगर १७ से २० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप साधारण होता है और गुण अगर ० से १६ के मध्य में हो तो इसे अशुभ माना जाता है।

आठो कूट इस प्रकार से हैं - १) वर्ण २) वश्य ३) तारा ४) योनि ५) ग्रह मैत्री ६) गण ७) भकूट और ८) नाडी

वर्ण	वश्य	तारा	योनि
ग्रह मैत्री	गण	भकूट	नाड़ी

अष्टकूट मिलान विधि:

अष्टकुट मतलब ८ अलग-अलग कुटो का मिलान। इन सभी कुटो के मिलान में जन्म नक्षत्र और जन्म राशि का उपयोग किया जाता है।

अष्टकूट के आठों कूट इस प्रकार हैं :

वर्ण – जातक के वर्ण से उसकी कार्य क्षमता , व्यक्तित्व , आचरण- व्यावहार तथा उससे जुड़ी हुई कई प्रमुख बातों का पता चल जाता है ।

वश्य – वर / कन्या की अभिरुचि तथा शारीरिक ,मानसिक ,भावनात्मक प्रकृति को दर्शाता है ।

तारा – तारा कूट वर – कन्या के वैचारिक मतभेद , विरोधात्मकता , धन की स्थिति व आपसी रिश्तों में सहजता को दर्शाता है ।

योनि – योनी वर - कन्या के आपसी व्यावहार विचार , रहन-सहन ,इत्यादि को दर्शाता है । यह शारीरिक आकर्षण तथा लैंगिक अनुकूलता (मूल वृत्ती) भी दर्शाता है ।

ग्रह मैत्री – यह दर्शाता है वर-कन्या की मनोवृत्ती एवं स्वभाव के तालमेल को । ग्रह मैत्री मनोवैज्ञानिक स्वभाव के विश्लेषण का सबसे अच्छा उपकरण है ।

– गण दर्शाता है , परस्पर प्रेम , सामंजस्य , सौमनस्यता, मनोदशा , एक दूसरे के प्रति आकर्षण और लगाव को ।

भकूट – यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता ।

नाड़ी – दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

www.vedicrishi.in

गुण	विवरण	पुरुष	स्त्री	कुल	प्राप्त
वर्ण	कार्य क्षमता और व्यक्तित्व	शूद्र	वैश्य	1	0
वश्य	व्यक्तिगत संबंध	मानव	मानव	2	2
तारा	समृद्धि और भाग्य	आर्द्रा	उत्तर फाल्गुनी	3	1.5
योनि	अंतरंग सम्बन्ध	स्वान	गौ	4	2
ग्रह मैत्री	मैत्री मेल	बुध	बुध	5	5
गण	सामाजिक दायित्व	मनुष्य	मनुष्य	6	6
भकूट	रचनात्मक क्षमता	मिथुन	कन्या	7	7
नाड़ी	संतान	आदि	आदि	8	0
कुल	-	-	-	36	23.5

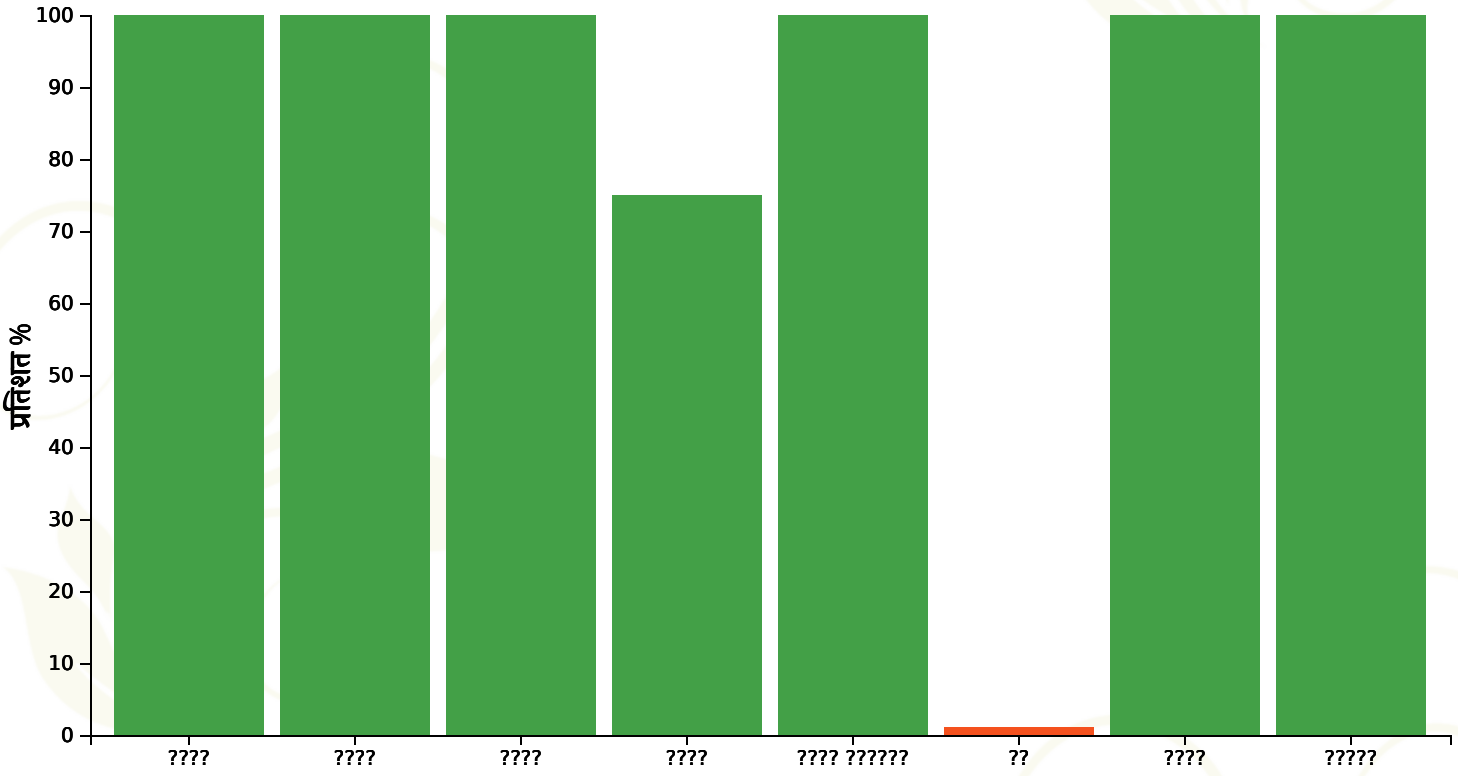

www.vedicrishi.in

दशकूट क्या होता है

एक लंबे और सुखी विवाहित जीवन को सुनिश्चित करने के लिए, प्राचीन भारतीय ऋषियों और संतों ने विवाह अनुकूलन योग्यता या विवाहयोग्य संगतता को जांचने के लिए एक विधि तैयार की जिसे कुंडली मिलान कहा जाता है। उन्होंने पुरुष और स्त्री के जन्म नक्षत्रो को लेकर कूट मिलान विधि तैयार की। शुरुआत में कुल २० कुटो का उपयोग मिलान पद्धति में किया जाता था। लेकिन इन २० कुटो में से केवल १० कुट ही वास्तव में कुंडली मिलान के लिए उपयोगी थे। भारत के कुछ हिस्सों में केवल 8 कूट को लेकर ही कुंडली मिलान किया जाता है। दसकुट मिलान की विधि को हिंदी में दश पोरिथम और तमिल में १० पॉरुथम कहा जाता है।

दसो कूट इस प्रकार से हैं - १) दीन २) गण ३) योनि ४) राशि ५) राश्याधिपति ६) रज्जू ७) वेध ८) वश्य ९) महेन्द्रं और ८) स्त्रिदिर्घ

दीन	गण	योनि	राशि
राश्याधिपति	रज्जु	वेध	वश्य
महेंद्र	स्त्री दीर्घ		

दशकूट नीचे दिए गए प्रकार से है :

दीन – तारा कूट वर – कन्या के वैचारिक मतभेद , विरोधात्मकता , धन की स्थिति व आपसी रिश्तों में सहजता को दर्शाता है ।

गण – गण दर्शाता है , परस्पर प्रेम , सामंजस्य , सौमनस्यता, मनोदशा , एक दूसरे के प्रति आकर्षण और लगाव को ।

योनि – योनी वर - कन्या के आपसी व्यावहार विचार , रहन-सहन ,इत्यादि को दर्शाता है । यह शारीरिक आकर्षण तथा लैंगिक अनुकूलता (मूल वृत्ती) भी दर्शाता है ।

राशि – यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता ।

राश्याधिपति – यह दर्शाता है वर-कन्या की मनोवृत्ती एवं स्वभाव के तालमेल को । ग्रह मैत्री मनोवैज्ञानिक स्वभाव के विश्लेषण का सबसे अच्छा उपकरण है ।

रज्जु – यह दस कुटो में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह पति के लिए एक लंबा जीवन सुनिश्चित करता है।

वेध – वेध का मतलब दु:ख है विवाहित जीवन में सभी बुराइयों और नुकसान कारक होगा अगर कुंडली मिलान में वेध दोष उपस्थित है।

वश्य – वर / कन्या की अभिरुचि तथा शारीरिक ,मानसिक ,भावनात्मक प्रकृति को दर्शाता है ।

महेंद्र – दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

स्त्री दीर्घ – यह धन और समस्त समृद्धि का संचय सुनिश्चित करता है।

www.vedicrishi.in

गुण	पुरुष	स्त्री	कुल	प्राप्त
दीन	आर्द्रा	उत्तर फाल्गुनी	3	0
गण	मनुष्य	मनुष्य	4	4
योनि	स्वान	गौ	4	2
राशि	मिथुन	कन्या	7	7
राश्याधिपति	बुध	बुध	5	5
रज्जु	-	-	5	5
वेध	आर्द्रा	उत्तर फाल्गुनी	2	2
वश्य	मानव	मानव	2	2
महेंद्र	आर्द्रा	उत्तर फाल्गुनी	2	2
स्त्री दीर्घ	आर्द्रा	उत्तर फाल्गुनी	2	2
कुल	-	-	36	31

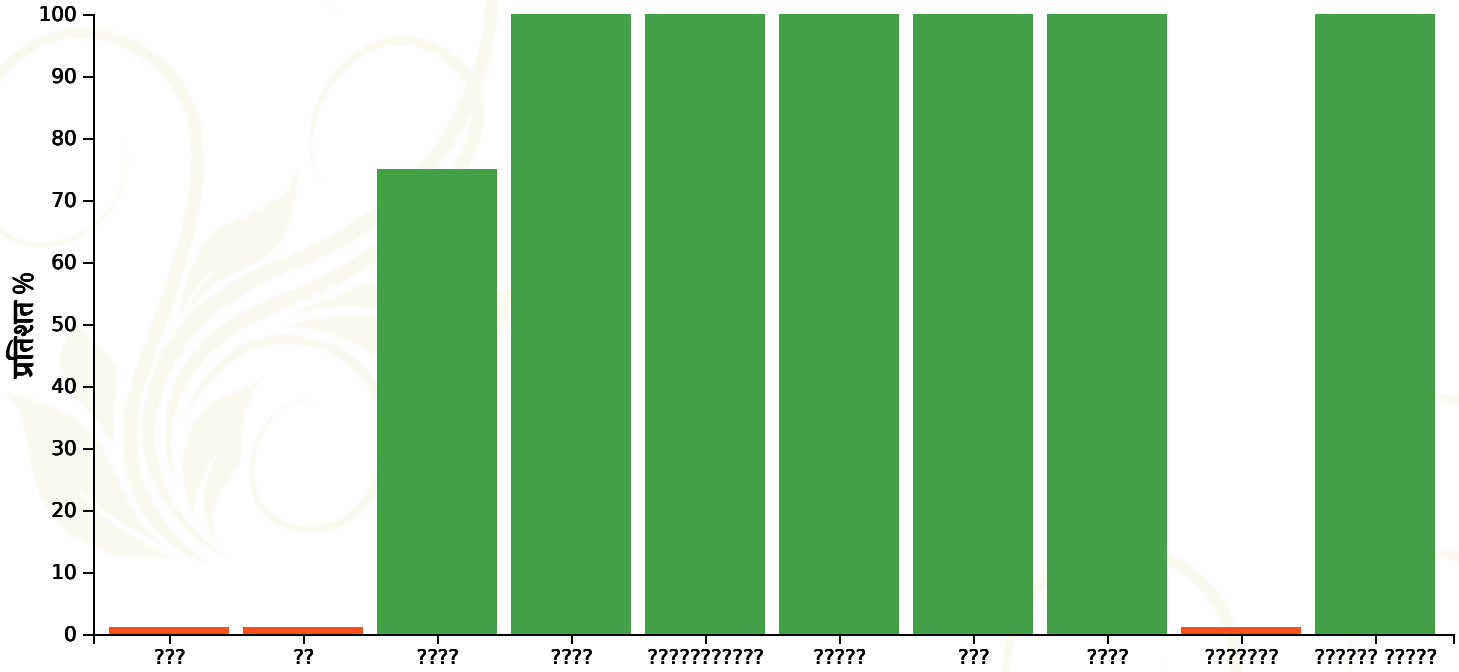

www.vedicrishi.in

वेध दोष क्या होता है ?

वेध तकनीक का प्रयोग जोड़ी के पूरी तरह से एक साथ आने से रोकने वाले अत्यधिक अवरोधों के निर्धारण के लिए किया जाता है। रिश्ते को प्रभावित कर सकने वाले दो प्रमुख महा-दोषो में से एक है।

वेध दोष विश्लेषण

उपस्थित नहीं है।

लड़के के नक्षत्र और लड़की के नक्षत्र के बीच में कोई वेध दोष है।

www.vedicrishi.in

भकूट क्या होता है?

भकूट राशियों के अंतर पर आधारित होता है भकूट का अर्थ ही है , राशियों का समूह भकूट को अधिकतम 7 गुण दिए गए हैं । यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता । वर- कन्या की राशियाँ यदि एक दूसरे से 6 - 8 , 5 – 9 या 2 – 12 हो तो भकूट दोष लगता है और 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं । उपर्युक्त तीनों दोषों को छोड़कर अन्य सभी जोड़ियों को 7 अंक प्राप्त है ।

भकूट दोष विश्लेषण

Rajesh
मिथुन

Shraddha
कन्या

भकूट दोष उपस्थित नहीं है।

www.vedicrishi.in

नाड़ी क्या होता है?

नाड़ी : दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

नाड़ियाँ 3 प्रकार की होती है :1) आदय - वात नाड़ी, 2) मध्य - पित्त नाड़ी , 3)अन्त्य - कफ नाड़ी । वर और कन्या की नाड़ी भिन्न होनी चाहिए । यदि दोनों की नाड़ियाँ एक हुई तो कई दुष्परिणाम देखे जाते हैं , जैसे संतति से संबंधित परेशानियाँ । संतान शारीरिक , मानसिक रूप से अस्वस्थ रहती है , संतान में प्रखर बुद्धि , चेतना स्मरणशक्ति का अभाव रहता है ।

नाड़ी दोष उपस्थित होने पर क्या प्रभाव होता है

गुण मिलान करते समय यदि वर और वधू की नाड़ी अलग-अलग हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 8 अंक प्राप्त होते हैं, जैसे कि वर की आदि नाड़ी तथा वधू की नाड़ी मध्या अथवा अंत। किन्तु यदि वर और वधू की नाड़ी एक ही हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 0 अंक प्राप्त होते हैं तथा इसे नाड़ी दोष का नाम दिया जाता है। नाड़ी दोष की प्रचलित धारणा के अनुसार वर-वधू दोनों की नाड़ी आदि होने की स्थिति में तलाक या अलगाव की प्रबल संभावना बनती है तथा वर-वधू दोनों की नाड़ी मध्य या अंत होने से वर-वधू में से किसी एक या दोनों की मृत्यु की प्रबल संभावना बनती है।

नाड़ी दोष विश्लेषण

Rajesh
आदि

Shraddha
आदि

इस मिलान में नाड़ी दोष उपस्थित है क्योंकि दोनों ही जातकों की नाड़ी सामान है।

www.vedicrishi.in

अष्टकूट विश्लेषण - I

कार्य क्षमता और व्यक्तित्व

वर्ण - 0/1

आपस में सहयोग के कारण कार्यशक्ति उत्तम, यानी बेहतर बनी रहेगी । बौद्धिक कार्यों में सफलता मिलेगी । आपसी प्रेम आपसी रुझान बहुत ही अच्छा रहेगा । दोनों का व्यावहार एक-दूसरे के लिए उत्तम रहेगा ।

व्यक्तिगत संबंध

वश्य - 2 / 2

दोनों में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण ख़ूब रहेगा । आपसी सहमती, शारीरिक मानसिक व भावनात्मक स्तर पर एक-दूसरे के पूरक होंगे । भावनाएँ दोनों की एक-दूसरे से मेल खाएँगी । मानसिक रुप से भी दोनों एक-दूसरे के योग्य होंगे ।

समृद्धि और भाग्य

तारा - 1.5 / 3

विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी धन की स्थिति ठीक-ठाक रहेगी । मतलब बढ़ोतरी ही होगी गिरावट नहीं होगी । इसके पश्चात भी धन संग्रह होंगे । दोनों में सहजता रहेगी ,संबंध मध्यम रहेंगे ।

अंतरंग सम्बन्ध

योनि - 2 / 4

दोनों ही शारीरिक रुप से सुंदर तो होंगे परंतु एक-दूसरे से ख़ुश नहीं रहेंगे । व्यवहार विचार एक-दूसरे का न के बराबर ही मिलेगा और अनुकूल दिखने पर भी, एक-दूसरे के लिए अनुकूल नहीं होंगे । संबंध फिका-फिका रहेगा ।

www.vedicrishi.in

अष्टकूट विश्लेषण - II

मैत्री मेल

ग्रह मैत्री - 5 / 5

Aesthetic qualities shall match. You shall share a friendly relationship due to similar interests and opinions. You shall share a good rapport with each other. You shall be particularly interested in the fields of beauty and arts; you shall achieve outstanding success in these sectors.

सामाजिक दायित्व

गण - 6 / 6

अति उत्तम संबंध, परस्पर प्रेम एक-दूसरे की मनोभावनाओं को समझेंगे । एक-दूसरे के बीच सामंजस्य की स्थिति होगी, बनी रहेगी । हमेशा एक-दूसरे के प्रति आकर्षण बना रहेगा एवं दोनों एक-दूसरे के लिए बिलकुल उपयुक्त होंगे । एक-दूसरे के पूरक होंगे ।

रचनात्मक क्षमता

भकूट - 7 / 7

परस्पर दोनों में आकर्षण बना रहेगा । दोनो एक-दूसरे के प्रति अनुराग से भरे रहेंगे । संबंध स्नेहमय बना रहेगा । रचना क्षमता में वृद्धि होगी । रचनात्मक कार्य होते रहेंगे ।

संतान

नाड़ी - 0 / 8

शारीरिक एवं मानसिक रूप से दोनों एक-दूसरे के लिए सही नहीं होंगे । दामपत्य में हानी का योग है अत: दोनों एक-दूसरे के लिए उपयुक्त नहीं रहेंगे । ख़ुशी में जीवन नही गुज़रेगा ,दोनों के बीच संतुलन हो नहीं पाएगा ।

www.vedicrishi.in

पापसम्यम

Papa (dosha) Comparison is done here by assigning points for the position of Mars, Saturn, Rahu, Ketu and Sun with respect to Lagna, Moon as well as Venus.

Rajesh पाप अंक

पाप अंक	लग्न से		चंद्र से		शुक्र से	
	स्थान	पाप	स्थान	पाप	स्थान	पाप
सूर्य	5	0	4	6	1	6
मंगल	1	12	12	4	9	0
शनि	8	18	7	15	4	9
राहु	9	0	8	4.5	5	0
कुल	--	30	--	14.75	--	3.75

Shraddha पाप अंक

पाप अंक	लग्न से		चंद्र से		शुक्र से	
	स्थान	पाप	स्थान	पाप	स्थान	पाप
सूर्य	11	0	7	7.5	1	4.5
मंगल	10	0	6	0	12	4
शनि	10	0	6	0	12	0.75
राहु	7	5	3	0	9	0
कुल	--	5	--	3.75	--	2.3125

पापसम्यम निष्कर्ष

पापसम्यम शुभ है।

www.vedicrishi.in

व्यक्तित्व विवेचना

Rajesh व्यक्तित्व विवेचना

वृषभ राशि के व्यक्ति बलवान,अनवरत, दृढ़-संकल्पी धीरे धीरे स्वयं को बदलने वाले ,स्थिर, शांत(जब तक बहुत परेशान ना किया जाए—अन्यथा जंजाल का कारण) - वफादार, व्यावहारिक, ज़िद्दी, गैर आक्रामक, सहनशील, स्नेही, परिश्रमी , निष्क्रिय और सामान्यतः अभिमानी और मन की एक सामान्य धीमी गति के साथ अपनी आस्थाओं से प्रतिबद्ध होते हैं ।

वृषभ राशि के व्यक्ति किसी के नेतृत्व में या,मान-मनोव्वल से तो कार्य कर सकते हैं लेकिन उनसे जोर ज़बरदस्ती से कुछ भी नहीं करवाया जा सकता । संसाधन और संपत्ति, चाहे वह व्यक्ति हों या वित्त, आप के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

> "आप परिस्थितियों को बनाना और विकसित करना चाहते हैं, लेकिन आप से जल्दबाजी में यह नहीं करवाया जा सकता । आप चीजों को स्वयं ही पाना चाहते हैं और अपनी खुद की कड़ी मेहनत के व्यावहारिक परिणाम देखना चाहते हैं।

आप दूसरों द्वारा आरम्भ किये गए कार्यों को सफलता पूर्वक ग्रहण कर लेते हैं और आगे ले जाते हैं। सच्ची दृढ़ता और इच्छा से आपको सफलता प्राप्त होती है। मीठे या स्वादिष्ट भोजन से आपका प्यार को आप के वजन को बढ़ा सकता है ।

आप जो भी कार्य करें उसे कम सख्ती से करने की की कोशिश करें । अपने अन्दर ईर्ष्या की भावना और हावी होने की प्रवृत्ति को पनपने ना दें । बीमारी और दर्द से आप डरते भी हैं और घृणा भी करते हैं ।

Shraddha व्यक्तित्व विवेचना

वृषभ राशि के व्यक्ति बलवान,अनवरत, दृढ़-संकल्पी धीरे धीरे स्वयं को बदलने वाले ,स्थिर, शांत(जब तक बहुत परेशान ना किया जाए—अन्यथा जंजाल का कारण) - वफादार, व्यावहारिक, ज़िद्दी, गैर आक्रामक, सहनशील, स्नेही, परिश्रमी , निष्क्रिय और सामान्यतः अभिमानी और मन की एक सामान्य धीमी गति के साथ अपनी आस्थाओं से प्रतिबद्ध होते हैं ।

वृषभ राशि के व्यक्ति किसी के नेतृत्व में या,मान-मनोव्वल से तो कार्य कर सकते हैं लेकिन उनसे जोर ज़बरदस्ती से कुछ भी नहीं करवाया जा सकता । संसाधन और संपत्ति, चाहे वह व्यक्ति हों या वित्त, आप के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

> "आप परिस्थितियों को बनाना और विकसित करना चाहते हैं, लेकिन आप से जल्दबाजी में यह नहीं करवाया जा सकता । आप चीजों को स्वयं ही पाना चाहते हैं और अपनी खुद की कड़ी मेहनत के व्यावहारिक परिणाम देखना चाहते हैं।

आप दूसरों द्वारा आरम्भ किये गए कार्यों को सफलता पूर्वक ग्रहण कर लेते हैं और आगे ले जाते हैं। सच्ची दृढ़ता और इच्छा से आपको सफलता प्राप्त होती है। मीठे या स्वादिष्ट भोजन से आपका प्यार को आप के वजन को बढ़ा सकता है ।

आप जो भी कार्य करें उसे कम सख्ती से करने की की कोशिश करें । अपने अन्दर ईर्ष्या की भावना और हावी होने की प्रवृत्ति को पनपने ना दें । बीमारी और दर्द से आप डरते भी हैं और घृणा भी करते हैं ।

www.vedicrishi.in

विशेषता - लक्षण

सकारात्मक लक्षण

Rajesh

व्यावहारिक | विश्वसनीय | शांत और धैर्यवान | अनुरागशील

Shraddha

व्यावहारिक | विश्वसनीय | शांत और धैर्यवान | अनुरागशील

नकारात्मक लक्षण

Rajesh

आलसी | अधिकारात्मक | जिद्दी | चिंतित

Shraddha

आलसी | अधिकारात्मक | जिद्दी | चिंतित

www.vedicrishi.in

अष्टकूट

लड़का और लड़की की कुंडलियों के अष्टकूट मिलान से उन्हें 36 अँको में से 23.5 अंक प्राप्त हुए हैं. इसके अलावा, इनके राशि स्वामी भी एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखते हैं - जिससे दोनों के बीच मानसिक अनुकूलता और आपसी स्नेह बना रहेगा। इसलिए, यह एक सकारात्मक मेल कहा जा सकता है।

दशकूट

लड़का और लड़की की कुंडलियों के दशकूट मिलान से उन्हें 36 अँको में से 31 अंक प्राप्त हुए हैं । जिससे दोनों के बीच मानसिक अनुकूलता और आपसी स्नेह बना रहेगा। इसलिए, यह एक सकारात्मक मेल कहा जा सकता है।

मांगलिक

लड़का मांगलिक नहीं है; और न ही लड़की मांगलिक है। दोनों कुंडलियों में मंगल दोष अनुपस्थित होने के कारण भविष्य में उनके वैवाहिक जीवन पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा यह विवाह किया जा सकता है।

मिलान निष्कर्ष

" विवाह के लिए यह एक अत्युत्तम जोड़ी है. यह युगल एक लंबे समय तक स्थायी रिश्ते में बंधे रहेंगा , जो सुख और समृद्धि के भरा होगा ।

www.vedicrishi.in

VedicRISHI Astro is committed to provide its user simple and yet interactive platform to organize, view and analyze their horoscopes absolutely free.

Vedic Rishi Astro Pvt. Ltd.
www.vedicrishi.in
mail@vedicrishiastro.com
022 26359681